सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन “अज्ञेय”

जीवन परिचय

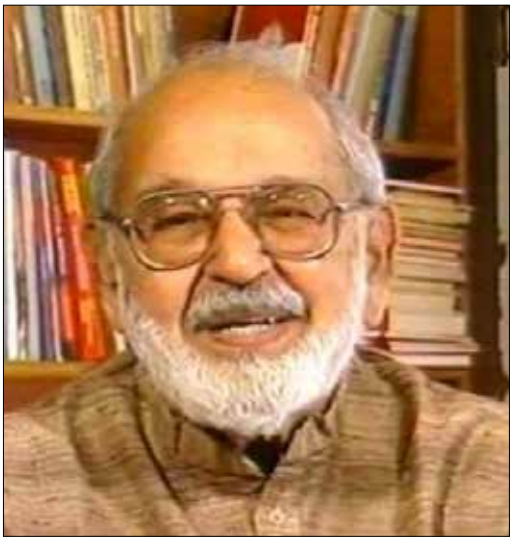

जन्म : ‘अज्ञेय’ जी का जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के कसया (कुशीनगर) नामक ऐतिहासिक स्थान में हुआ था. इनकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा विद्वान पिता की देख-रेख में घर पर ही संस्कृत, फारसी, अँग्रेज़ी और बँगला भाषा व साहित्य के अध्ययन के साथ हुई. 1929 में लाहौर के फॉरमन कॉलेज से बी एस सी की परीक्षा पास की. इन्होंने किसान आंदोलन में भी सक्रिय रूप से भाग लिया. 1930 से 1936 तक के दौरान इनका अधिकांश समय विभिन्न जेलों में कटे.

कार्यक्षेत्र : अज्ञेय जी को 1936-1937 में 'सैनिक' पत्रिका और पुनः कलकत्ता से निकलने वाले `विशालभारत' के संपादन का दायित्व मिला. इसी पत्र के माध्यम से ये सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन ‘अज्ञेय’ के नाम से साहित्य-जगत में प्रतिष्ठित हुए. इसके बाद 1947 में इलाहाबाद से `प्रतीक' नामक पत्रिका का संपादन शुरु किया. 1965 में इन्हें हिन्दी के प्रसिद्ध पत्र ‘दिनमान’ के संपादक के रूप में नियुक्त किए गए. कुछ समय तक इन्होंने जोधपुर विश्वविद्यालय में हिंदी के निदेशक पद पर भी कार्य किया. इस प्रकार साहित्य के साथ ‘अज्ञेय’ जी ने हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया.

पुरस्कार : (1.) 1964 में `आँगन के पार द्वार' पर उन्हें साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ। (2.) 1978 में 'कितनी नावों में कितनी बार' शीर्षक काव्य ग्रंथ पर भारतीय ज्ञानपीठ का सर्वोच्च पुरस्कार मिला।

मृत्यु : 4 अप्रैल 1987 को अज्ञेय जी का निधन हुआ।

काव्य रचनाएँ–भग्नदूत, चिंता, इत्यलम्, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इंद्र धनु रौंदे हुए ये, अरी ओ करूणा प्रभामय, आंगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ, सागर-मुद्रा, सुनहरे शैवाल, महावृक्ष के नीचे, पहले मैं सन्नाटा बुनता हूं, और ऐसा कोई घर आपने देखा है इत्यादि उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं।

उपन्यास	शेखर: एक जीवनी (दो भागों में), नदी के द्वीप, अपने अपने अजनबी।
कहानी-संग्रह	विपथगा, परंपरा, कोठरी की बात, शरणार्थी, जयदोल, ये तेरे प्रतिरूप आदि।
यात्रा वृत्तांत	अरे यायावर रहेगा याद, एक बूंद सहसा उछली।
निबंध संग्रह	त्रिशंकु, आत्मनेपद, हिंदी साहित्य: एक आधुनिक परिदृश्य आदि।
संस्मरण	स्मृति लेखा

साहित्यिक योगदान

अज्ञेय एक सफल कवि, उपन्यासकार, कहानीकार और आलोचक रहे हैं. इन सभी क्षेत्रों में वे शीर्षस्थ भी थे. छायावाद और रहस्यवाद के युग के बाद हिन्दी-कविता को नई दिशा देने में अज्ञेय जी का सबसे बड़ा हाथ है. हिन्दी के अनेक नए कवियों के लिए अज्ञेय जी प्रेरणा-स्रोत और मार्ग-दर्शक रहे हैं. आपकी रचनाओं का मूल स्वर दार्शनिक और चिन्तन-प्रधान है.

कवि और गद्यकार दोनों ही रूपों में उन्होंने नयी दिशाओं का आविष्कार एवं परिष्कार किया. उन्होंने कविता को छायावादी अतिशय भावुकता और प्रगतिवाद एकांगी मानसिकता से अलग कर एक नयी काव्य भूमि की ओर ले जाने का बीड़ा उठाया. अज्ञेय जी के लेखन के केंद्र में निहित व्यक्ति मुक्त है, मूल्य सर्जक है और जिम्मेदारी के एहसास से भरा हुआ भी. उनके अनुसार दूसरे तक मूल्यबोध को पहुंचाना साहित्यकार का दायित्व है. यही उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता है.

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के संपादन के साथ-साथ अज्ञेय ने तारसप्तक, दूसरा सप्तक और तीसरा सप्तक जैसे युगांतरकारी काव्य संकलनों का भी संपादन किया. वत्सलनिधि से प्रकाशित आधा दर्जन निबंध-संग्रहों के भी संपादक हैं. निस्संदेह वे आधुनिक साहित्य के एक शलाका-पुरूष थे जिसने हिंदी साहित्य में भारतेंदु के बाद एक दूसरे आधुनिक युग का प्रवर्तन किया.

चुटकुले

1 मुकेश – डॉक्टर साहब, मुझे एक समस्या है।
डॉक्टर – क्या ?
मुकेश – बात करते वक्त मुझे आदमी दिखाई नहीं देता।
डॉक्टर – और ऐसा कब होता है?
मुकेश – फोन पर बात करते वक्त ...

2. एक बच्चा रोटी खा रहा था और पास बैठी मुर्गी को खिला रहा था।
पापा – ये क्या कर रहा है?
बच्चा – चिकन के साथ रोटी खा रहा हूं.